विटगेन्सटाइन का सामान्य के सन्दर्भ में पारिवारिक साम्य का सिद्धान्त

AMIT KUMAR SINGH
Research Scholer
DEPARTMENT OF PHILOSOPHY, UNIVERSITY OF ALLAHABAD

Abstract-परिवारिक सादृश्यता का सिद्धान्त हमें उत्तरकालीन विटगेन्सटाइनके दर्शन में प्राप्त होता है। विटगेन्सटाइन सामान्य शब्दों के अर्थ को समझाने के लिए या सामान्य की समस्या को हल करने के लिए पारिवारिक सादृश्यता के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं। विटगेन्सटाइन ने पारिवारिक साम्य की अवधारणा को The Blue Book and Brown Books और Philosophical Investigations में प्रतिपादित किया है। विटगेन्सटाइन के पारिवारिक सादृश्यता सिद्धान्त के दो पहलू है– एक नकारात्मक और दूसरा सकारात्मक। नकारात्मक पहलू के अर्न्तगत विटगेन्स्टाइन वस्तुवादियों के दावों को नकारता है और सकारात्मक पहलू के अन्तर्गत वह तथ्यों के सादृष्यता के द्वारा सामान्य पदों की व्याख्या करने का प्रयास करता है जिसे वह पारिवारिक सादृश्यता का सिद्धान्त कहता है।

भूमिका–सामान्य का पारिवारिक साम्य का सिद्धान्त(सादृश्य सिद्धान्त), सामान्य को विशेषों और उनके बीच पाये जाने वाले सादृश्य के सम्बन्ध के द्वारा परिभाषित करता है। इस दृष्टि से यह प्लेटो की अपेक्षा अरस्तू के अधिक निकट इस बात में है, कि इसके अनुसार सामान्य की आवश्यक रूप से केवल विशेषों के द्वारा ही परिभाषा दी जा सकती है। और इस कारण से उदाहरणों के अभाव में सामान्य हो ही नहीं सकता। परन्तु अरस्तू के सिद्धान्त से इसका अन्तर यह है कि यह सामान्य को ऐसा लक्षण नहीं मानता जिसकी विशेषों की एक बड़ी संख्या में पुनरावृत्ति होती हो और जो प्रत्येक विशेष में संख्या की दृष्टि से अभिन्न हो। इस सिद्धान्त को सादृश्य–सिद्धान्त कहा जा सकता है, इसके अनुसार किसी भी निर्दिष्ट वस्तु के गुण उतने ही विशेष और स्थनीय होते हैं जितनी स्वयं वह वस्तु होती है। यदि मेरे पास एक ही रचना , आकार और रंग वाली दो गेंदें हों जिनमें से एक मेरे सामने मेज पर है और दूसरी मेरे पीछे है, तो मेज वाली गेंद की लालिमा और गोलाई स्वयं भी मेज पर है और इसलिए दूसरी गेंद की लालिमा और गोलाई से, जो मेरे पीछे है, भिन्न है। यद्यपि एक अर्थ में दोनों गेंदों की लालिमा एक ही है, तथापि एक दूसरे अर्थ में वे भिन्न है। प्रत्येक लाल रंग उस विशेष गेंद का जिसमें वह है, निजी और विलक्षण रंग है; और जिस अर्थ में दोनों गेंदों का लाल रंग एक ही है उसको प्रकट करने का अधिक अच्छा तरीका यह कहना है कि एक का लाल रंग ठीक दूसरी के लाल रंग के समान है।[1]

सामान्य के सादृश्यतावादी सिद्धान्त के अनुसार सामान्य किसी जाति या वर्ग के अन्तर्गत आने वाली विशेष वस्तुओं में समानता को कहा जाता है, जैसे–अनेक गायों में पाया जाने वाला गल–कम्बल उन्हे अन्य पशुओं से भिन्न करता है, किन्तु किन्ही भी दो गायों के गल–कम्बल हू–ब–हू एक जैसे नहीं होते हैं, परन्तु उनमें कुछ समानताएँ अवश्य पायी जाती हैं। इन्हीं सादृश्यों के आधार पर उनको एक वर्ग के अन्तर्गत रखा जाता है।परिवारिक सादृश्यता का सिद्धान्त हमें उत्तरकालीन

विटगेन्सटाइन के दर्शन में प्राप्त होता है। इस सिद्धान्त पर चर्चा करने से पहले हमें सामान्य गुणों या तत्वों पर आधारित सामान्य शब्दों के पारम्परिक वस्तुवादी सिद्धान्त पर संक्षेप में चर्चा कर लेना उचित होगा क्योंकि पारिवारिक सादृश्यता का सिद्धान्त सामान्य की समस्या की एक वैकल्पिक व्याख्या है।

यथार्थवादी सिद्धान्त का मूलरूप प्लेटो के प्रत्यय सिद्धान्त में निहित है। प्रत्यय सिद्धान्त में प्लेटो प्रत्ययों की एक अलग दुनिया की कल्पना करता है, आनुभविक जगत की विशेष वस्तुएँ उस प्रत्यय जगत की प्रतिलिपियाँ है। प्लेटो के अनुसार , प्रत्यय या सामान्य मूल सत्ता है जो विशेषों पर निर्भर नहीं रहते हैं। एक ही तरह की विभिन्न वस्तुओं के लिए एक सामान्य पद का प्रयोग होता है क्योंकि सामान्य पदों के दृष्टान्तों और प्रत्ययों के जगत के बीच उनमें से प्रत्येक के पास एक निश्चित संबंध होता है। वहीं अरस्तू ने प्लेटो के प्रत्ययों को अस्वीकार कर दिया और वस्तु के सारतत्व को , जो वस्तु के अन्दर विद्यमानहोता है, बाहर नहीं स्वीकार किया। अरस्तू के अनुसार, एक सामान्य पद या शब्द किसी वस्तु के सारतत्व के लिये प्रयोग होता है और उस सामान्य पद की व्याख्या सारतत्व के द्वारा होती है।

विटगेन्सटाइन सामान्य शब्दों के अर्थ को समझाने के लिए या सामान्य की समस्या को हल करने के लिए पारिवारिक सादृश्यता के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं। विटगेन्सटाइन ने पारिवारिक साम्य की अवधारणा को The Blue Book and Brown Books[2]और Philosophical Investigations[3]में प्रतिपादित किया है। विटगेन्सटाइन के पारिवारिक सादृश्यता सिद्धान्त के दो पहलू है– एक नकारात्मक और दूसरा सकारात्मक। नकारात्मक पहलू के अर्न्तगत विटगेन्स्टाइन वस्तुवादियों के दावों को नकारता है और सकारात्मक पहलू के अन्तर्गत वह तथ्यों के सादृश्यता के द्वारा सामान्य पदों की व्याख्या करने का प्रयास करता है जिसे वह पारिवारिक सादृश्यता का सिद्धान्त कहता है।

विटगेन्सटाइन के अनुसार, "इन घटनाओं में ऐसी कोई भी उभयनिष्ठ वस्तु नहीं है जो सभी वस्तुओं के लिए समान शब्द का प्रयोग करती हो।"[4] लेकिन यह ढूढने की हमारी सामान्य प्रवृत्ति होती है कि "सभी तत्वों के लिए कुछ उभयनिष्ठ है जिसे हम आमतौर पर एक सामान्य शब्द के तहत सम्मिलित कर लेते हैं।"[5] हम करते हैं और अलग–अलग व्यक्तियों के लिए समान सामान्य शब्द लागू कर सकते हैं, इसलिए नहीं कि इन व्यक्तियों में कुछ समान विशेषताएँ उभयनिष्ठ हैं बल्कि इसलिए कि उनमें गुणों की सादृश्यता की परस्परव्याप्ति होती है। इन सादृश्यताओं को विटगेन्सटाइन 'पारिवारिक सादृश्यता' कहते हैं , क्योंकि एक ही परिवार के सदस्यों के बीच रचना , असफलता , आँखों का रंग , चाल–ढाल , मनोदशा आदि , आदि विभिन्न सादृश्यताएँ परस्पर व्याप्त होती हैं।[6] उदाहरण के लिए खेल शब्द को लेते हैं खेल शब्द का कोई एकात्मक अर्थ नहीं होता अर्थात् यह कुछ निश्चित दशाओं द्वारा निर्धारित नहीं होता। अलग–अलग खेलों में विशेषताओं के समूह जैसे नियमबद्ध गतिविधियाँ , जीतने और हारने की संभावना , खिलाड़ियों के बीच प्रतिस्पर्धा , कुछ खुशी और मस्ती और बहुत कुछ पाये जाते हैं। हम इन विशेषताओं को $B_1, B_2, B_3, B_4 \ldots\ldots B_n$कह सकते हैं। ये विशेषताएँ सभी खेलों में नहीं होतीं। एक खेल में B_1,B_3,B_6 ,किसी अन्य खेल में B_1,B_2,B_5और किसी और अन्य खेल में B_2 औरB_3और भी इसी तरह की विशेषताएँ अन्य खलों में हो सकती हैं। इस प्रकार जब हम एक खेल से दूसरे खेल में जाते हैं, तो हम पाते हैं कि कुछ विशेषताएँ एक समान रहती हैं, कुछ विशेषताएँ लुप्त हो जाती हैं और कुछ नई विशेषताएँ सामने आती हैं। हम केवल "सादृश्यताओं का एक जटिल जाल देखते है जो आड़े, तिरछे और पारस्परव्याप्त होते हैं, कभी–कभी समग्र सादृश्यताएँ, कभी–कभी सादृश्यताओं का अंश।"[7]

विटगेन्सटाइन कहते हैं कि यदि हम 'खेल' की कल्पना करते हैं, तो हम विभिन्न खेलों के विषय में सोचते हैं, जैसे ताश का खेल, बोर्ड पर खेला जाने वाला खेल, गेंद से खेला जाने वाला खेल अथवा ओलम्पिक खेल आदि–आदि। सभी खेल हैं किन्तु इससे यह नहीं सिद्ध होता कि उनमें कुछ ऐसा है जो सभी खेलों में विद्यमान है। यदि हम 'ताश के खेल' तथा 'बोर्ड के खेल' को मिलाएं तो कुछ सादृश्यताएँ मिलेंगी लेकिन उनमें से कुछ गेंद वाले खेल के समान नहीं होगी। अर्थात् किसी दो में यदि कुछ सादृश्यता मिले भी तो तीसरे में वह नहीं भी रह सकता है। अर्थात् इस प्रकार देखने पर सादृश्यता का एक जाल उभर आयेगा, जिसमें सादृश्यताएँ कहीं अधिक दिखयी देंगी कहीं कम। इससे विटगेन्सटाइन यही निष्कर्ष निकालते हैं कि खेल की कोई निश्चित अवधारणा नहीं बन सकती। अलग–अलग खेलों को खेला जा सकता है, दिखाया जा सकता है। अधिक से अधिक यही कहा जा सकता है कि 'खेलों का एक परिवार है' तथा उनमें से सादृश्यता दिखाई देती है वह एक पारिवारिक सादृश्यता है, उस प्रकार की सामान्य सादृश्यता है जिस प्रकार की सादृश्यता एक परिवार के सदस्यों में हो सकती है।

खेल के स्वरूप की इस व्याख्या से यह स्पष्ट होता है कि 'भाषीय खेलों' में भी अन्य खेलों के साथ कुछ पारिवारिक सादृश्यता सकती है, तथा विभिन्न भाषीय खेलों में भी कुछ पारिवारिक सादृश्यता हो सकती है, लेकिन यहाँ एक समस्या है कि 'भाषीय खेल' की कोई निश्चित अवधारणा नहीं बन सकती। भाषीय खेल की कोई निश्चित विधि अथवा इसके कोई एक ढ़ंग निश्चित करने का प्रश्न भी नहीं उठता। जब कोई समस्या उपस्थित होती है उन समस्याओं के अनुरूप उस सन्दर्भ में भाषीय खेल खेला जाता है। जब दूसरी समस्या उपस्थित होती है तो उस समस्या के अनुरूप यह खेल खेलना होगा। इसी कारण उनके इस भाषीय–खेल–विचार में एक प्रकार की तदर्थता का निर्देष मिलता है।

विटगेन्सटाइन ने तदर्थता के साथ–साथ अनेक प्रकार के भाषीय खेलों की सम्भावना को भी स्वीकार किया है। उन्होंने भाषा के विभिन्न रूप को जीवन का विभिन्न रूप कहा है। इसका प्रारम्भ प्राथमिक भाषीय–खेल से होता है, जिसमें बच्चा भाषा सीखता है तथा इसके अन्तर्गत जीवन के हर रूप से सम्बन्धित भाषीय खेल आ जाते हैं अतः भाषीय खेल अनेकों हो सकते हैं, जिसे उनके अपने–अपने सन्दर्भों में खेलना है।

विटगेन्सटाइन की पारिवारिक सादृश्यता की अवधारणा इस बात से स्पष्ट होती है कि हर खेल में उस समस्या से सम्बन्धित भाषीय युक्तियों पर विचार करना होता है। ऊपर के परिक्षेदों में हमने देखा कि दर्शन से सम्बन्धित समस्या भाषा के गलत प्रयोग के कारण होती है, तथा उसके निदान के लिये भाषा की गल्ती को प्रकाषित कर देना चाहिए। यह सम्भव तभी हो सकता है कि हम उन प्रयोगों को उनकेसामान्य–साधारण, दैनिक प्रयोगों में बैठा कर देखें। यही तो भाषायी खेल है। उस समस्या को समस्या बनाने वाले भाषीय कथनों के विषय में हमें यही देखना है कि सामान्यतयः हम उन कथनों का प्रयोग किस–किस परिस्थितियों में करते हैं। इससे स्पष्ट हो जाएगा कि उस कथन के किसी साधारण प्रयोग से वह चित्र नहीं उभरता जिस चित्र के कारण समस्या बनी हुई है।

अब यह प्रश्न उठता है कि क्या इससे समस्या का निदान या अन्त हो जाएगा? विटगेन्सटाइन ने उत्तर दिया है कि इससे समस्या का निदान नहीं होगा, बल्कि समस्या ही नहीं रहेगी। यहाँ पर समस्या के निदान से विटगेन्सटाइन का अर्थ है, समस्या का समाप्त हो जाना। उपमा की भाषा में विटगेन्सटाइन ने कहा है कि दार्शनिक समस्या एक बोतल में फंसी मक्खी की भनभनाहट जैसी है। इसके निदान का अर्थ है, बोतल से मक्खी को निकाल कर उड़ा देना, यह निदान इस अर्थ में नहीं है कि

अब कोई ऐसी जानकारी मिल गयी हो जो पहले नहीं थी। नहीं यह निदान इस अर्थ में है कि जो उलझन थी वह समाप्त हो गई है, जो पहेली दिखाई देती थी वह पहेली नहीं रही।[8]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Woozley,A.D., An Introduction to Theory of Knowledge, Hutchinson:London,1949,Pp.89-90.
2. Wittgenstein,L. (1958) : The Blue and Brown Books, Basil Blackwell, Oxford, Pp.17-20.
3. Wittgenstein,L. (1958) : Philosophical Investigations, Trans. G.E.M. Anscombe, Basil Blackwell, Oxford, Sect. 65-71.
4. "these phenomena have no one thing in common which makes us use the same word to all. "
   Ibid, P-31e.
5. "something common to all entities which we commonly subsume under a general term."
   Wittgenstein,L. (1958) : The Blue and Brown Books, Basil Blackwell, Oxford, P.-17
6. " The various resemblances between members of a family : build, failures, colour of eyes, gait, temperament etc. etc. Overlap and criss cross in the same way."
   Wittgenstein,L. (1958) : Philosophical Investigations, Trans. G.E.M. Anscombe, Basil Blackwell, Oxford, Sect. 67, P-32e.
7. " a complicated network of similarities overlapping and criss-crossing : sometimes overall similarities, sometimes similarities of detail."
   Ibid, P-31e.
8. Ibid, sec-133, P-J1e.